बी.एच.डी.सी–109

स्नातक उपाधि प्रतिष्ठा (सी.बी.सी.एस)
बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी
(BAHDH)

सत्रीय कार्य
(जुलाई 2021 और जनवरी 2022 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.-109
हिंदी उपन्यास

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110068

हिंदी उपन्यास
(BHDC- 109)
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.–109 / 2021–2022

आपको प्रेमचंद पर आधारित पाठ्यक्रम बी.एच.डी.सी.–109 का केवल एक सत्रीय कार्य करना है। इस सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। यह सत्रीय कार्य खंड 1 तथा 2 पर आधारित है।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ हमारा तात्पर्य पाठ्यक्रम सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ सीखा और समझा है, उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आपको हिन्दी के विशिष्ट उपन्यासों से अवगत कराना है। इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने से आप हिन्दी के पाँच विशिष्ट उपन्यासों और उनके रचनाकारों से परिचित हो सकेंगे। इस पाठ्यक्रम पर आधारित सत्रीय कार्य से आप यह जान सकेंगे कि आपको पाठ्यक्रम में अध्ययन कराए जा रहे उपन्यासों के संदर्भ में कितनी समझ और दक्षता प्राप्त हुई है। प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1). ऐच्छिक पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।

2). अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

3). बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केंद्र का उल्लेख करें जैसे आगे दिखाया गया है।

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम / कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम / कोड : .....

दिनांक : .....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. सत्रीय कार्य पाठ्यक्रम के खंड 1 तथा 2 पर आधारित है। इसमें तीन भागों के अंतर्गत प्रश्न पूछे गए हैं, जिनका उद्देश्य प्रेमचंद और उनके साहित्य के गहन अध्ययन के संदर्भ में आपकी लेखन क्षमता की जाँच करना है।

2. इस सत्रीय कार्य में कुछ प्रश्न निबंधात्मक हैं। जिनके उत्तर पठित इकाइयों के आधार पर आपको निर्धारित शब्दों में देने हैं। कुछ प्रश्न टिप्पणीपरक हैं। एक प्रश्न पाठ्यक्रम में अध्ययन कराए जा रहे उपन्यास साहित्य के अंश दिए गए हैं, जिनकी संदर्भ सहित व्याख्या करनी है। इस प्रकार इन प्रश्नों से जहाँ एक ओर आपकी प्रेमचंद के साहित्य संबंधी समझ विकसित होगी वहीं दूसरी ओर आप पाठ्यक्रम में निर्धारित उपन्यासों के अंशों की व्याख्या–विश्लेषण में भी समर्थ हो सकेंगे। उत्तर लिखते हुए भाषागत शुद्धता का विशेष ध्यान रखें।

3. सत्रीय कार्य पूरा करके इसे जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास **जुलाई, 2021 में नामांकित विद्यार्थी 30 अप्रैल, 2022 तक एवं जनवरी, 2022 में नामांकित विद्यार्थी 31 अक्टूबर, 2022 तक जमा करा दें।**

उत्तर देने के लिए निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आप के लिए लाभप्रद रहेगा।

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास** : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। विषय संबंधी प्रश्नों के उत्तर लिखने से पहले आपने उत्तर पर अच्छी तरह से विचार कर लीजिए। अगर आप बिना समझे पुस्तक या अन्य किसी स्रोत की सहायता से उत्तर देंगे तो इससे आपको कोई लाभ नहीं होगा और सत्रांत परीक्षा में आप ऐसे प्रश्नों का सही उत्तर नहीं दे पाएँगे। निबंधात्मक प्रश्न में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो।
ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,
घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

हिंदी उपन्यास
(BHDC- 109)
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी–109
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.सी–109/टीएमए/2021–2022
कुल अंक 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भाग–क

1. **निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।** 10×4 = 40

(क) मुंशीजी तो भोजन करने गये और निर्मला द्वार की चौखट पर खड़ी सोच रही थी–भगवान्! क्या इन्हें सचमुच कोई भीषण रोग हो रहा है? क्या मेरी दशा को और भी दारुण बनाना चाहते हो? मैं इनकी सेवा कर सकती हूँ, सम्मान कर सकती हूँ, अपना जीवन इनके चरणों पर अर्पण कर सकती हूँ; लेकिन वह नहीं कर सकती, जो मेरे किये नहीं हो सकता। अवस्था का भेद मिटाना मेरे वश की बात नहीं। आखिर यह मुझसे क्या चाहते हैं–समझ गयी! आह! यह बात पहले ही नहीं समझी थी, नहीं तो इनको क्यों इतनी तपस्या करनी पड़ती, क्यों इतने स्वाँग भरने पड़ते।

(ख) मैं आठवीं क्लास में पढ़ता था। तब मैं क्या समझता हूँगा, क्या नहीं समझता हूँगा। फिर भी वह बातें मुझे बिल्कुल अच्छी नहीं मालूम हो रही थीं। जी मैं कुछ बेमतलब गुस्सा चढ़ता आता था। जी होता था कि वहीं के वहीं कोई दुस्सह अविनय कर डालूँ। ऐसे भाव की कोई वजह न थी, पर बाबू जी की कुछ दबी हुई स्थिति की झलक उनके चेहरे पर देखकर बड़ी खीझ मालूम हो रही थी। पर जाने मुझे क्या चीज रोक रही थी कि मैं फट नहीं पड़ा।

(ग) रामघाट पर नित्य बाबा रामचरित मानस सुनाते हैं। कोल–किरात आदि गण दूर–दूर से आकर आजकल चित्रकूट में ही अपना डेरा जमाए हुए हैं। वे बाबा के लिए फल, फूल, कंद ,मूल, दूध , दही आदि लेकर आते हैं। इस समय रामजियावन के घर में मानो आठों सिद्धि नवोनिधियों का वास है। तीसरे पहर कथा होती है और फिर भक्तों की भीड़ रमजियावन के घर में सजी हुई झाँकी देखने के लिए आती है। चित्रकूट की गली–गली में भक्तों की भीड़ यत्र–तत्र अपने बसेरे बसाए पड़ी है।

(घ) एक अध्याय था, जिसे समाप्त होना था और वह हो गया। दस वर्ष का यह विवाहित जीवन–एक अँधेरी सुरंग में चलते चले जाने की अनुभूति से भिन्न न था। आज जैसे एकाएक वह उसके अंतिम छोर पर आ गई है। पर आ पहुँचने का संतोष भी तो नहीं है, ढकेल दिए जाने की विवश कचोट–भर है। पर कैसा है यह छोर? न प्रकाश, न वह खुलापन, न मुक्ति का एहसास। लगात है जैसे इस सुरंग ने उसे एक दूसरी सुरंग के मुहाने पर छोड़ दिया है–फिर एक और यात्रा–वैसा ही अंधकार,वैसा ही अकेलापन।

भाग–ख

2. निम्नलिखित प्रश्नों (प्रत्येक) के उत्तर लगभग 750–800 शब्दों में दीजिए। 15×3 = 45

(क). 'निर्मला' उपन्यास की कथावस्तु का विश्लेषण कीजिए।
(ख). जैनेन्द्र के उपन्यासों की विशेषताएँ बताइए।
(ग). 'मानस का हंस' के राजनीतिक और धार्मिक परिवेश पर विचार कीजिए।

भाग–ग

3. निम्नलिखित (प्रत्येक) पर लगभग 250 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : 5×3 = 15

(क) पार्वती अम्माँ का चरित्र
(ख) 'मृगनयनी' का कथासार
(ग) 'आपका बंटी' के शीर्षक की उपयुक्तता